प्रश्न २—भारत की मौलिक एकता से क्या अभिप्राय है? इस एकता की अभिव्यक्ति किन रूपों में हुई?

अथवा

भारतवर्ष में अनेक विभिन्नताओं के बावजूद एक जबरदस्त एकता विद्यमान है। इस कथन की पुष्टि कीजिये।

मानव जाति का आदि देश कहाँ था? यह बतलाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। यह भी बतलाना सरल कार्य नहीं है कि विश्व की विभिन्न जातियों का आदि निवास किसी एक स्थान अथवा विश्व के भिन्न-भिन्न भागों में था। परन्तु इतना निश्चित है कि इन जातियों ने अपना आदि स्थान त्याग कर पर्यटन आरम्भ किया और कालान्तर में परस्पर मिल गईं। इस सम्मिश्रण के कारण मौलिकता में परिवर्तन आ गया और मिश्रित सभ्यता तथा संस्कृति का सृजन हुआ।

भारत के ऊपर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यह देश सदैव धन-धान्य से पूर्ण रहा। यही कारण है कि विदेशी लोग सदैव इसकी ओर आकर्षित हुए और इस पर विजय प्राप्त कर इसकी अपार सम्पत्ति का उपभोग करने का प्रयत्न किया। भिन्न-भिन्न जातियों ने भिन्न-भिन्न कालों में भारत में प्रवेश किया। कुछ जातियाँ भारतीयों में मिल गईं और अपना अस्तित्व खो बैठीं। परन्तु कुछ जातियों ने अपना अलग अस्तित्व बना रखा है। इन पर भारतीय सभ्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

भारतवर्ष का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब यहाँ एकता थी तब देशवासियों ने बहुत अधिक उन्नति की थी और एकता का अभाव होने पर सदैव पतन ही हुआ है। कुछ विदेशी विद्वानों का यह कहना है कि भारतवर्ष में वास्तविक एकता की स्थापना अंग्रेजों के आने के बाद हुई है। किन्तु इस धारणा के विपरीत अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने लिखा है कि भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन काल से ही एक जबर्दस्त मौलिक एकता विद्यमान रही है।

भारत की विभिन्नतायें

भारतवर्ष एक विशाल देश है। इसके विस्तार और इसकी विशालता के

कारण इसको बहुधा एक देश नहीं वरन् एक उपमहाद्वीप कहा जाता है। भोजन पान, वेश-भूषा, रहन-सहन तथा आचार-विचार इत्यादि में जितनी विभिन्नता भारतवर्ष में है उतनी संसार के किसी अन्य देश में नहीं है। पूर्व में रहने वाले आसामी और पश्चिम के गुजराती के भोजन-पान और आचार-विचार में ही अन्तर नहीं है बल्कि उनकी भाषा में भी काफी अन्तर है। इसी प्रकार श्रीनगर और मद्रास के निवासियों के जीवन में भी बहुत अन्तर है। इसके अलावा भारतवर्ष में विभिन्न जातियों, धर्मानुयाइयों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। प्राचीन काल में भी इस विभिन्नता का अच्छी तरह से ज्ञान हुआ था जिसका उल्लेख कर्मपुराण में मिलता है। कर्मपुराण में कहा गया है कि "भारतवर्ष में विभिन्न जाति के व्यक्ति रहते हैं तथा भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं और विभिन्न देवताओं की पूजा करते हैं।

"भारते स्त्रियः पुन्सो नानावर्णाः प्रकीर्तिताः।
नानादेवार्चने युक्ता नानाकर्माणि कुर्वते ॥"

मौलिक एकता

किन्तु इन विभिन्नताओं के बावजूद भी भारतवर्ष में जबरदस्त एकता रही है। प्रसिद्ध इतिहासकार स्मिथ ने कहा है, "इसमें सन्देह नहीं कि भारत में मौलिक एकता रही है। यह एकता रक्त, रंग, भाषा, वेश-भूषा और पूजोपासना के भेदों का अतिक्रमण कर जाती है।"

"India, beyond all doubts, possesses a deep underlying fundamental unity for more profound than that produced either by geographical isolation or by political suzerainty." —V. A. Smith

भारत की मौलिक एकता के विषय में श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा है, "भारतवर्ष सदैव से एक रहा है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि एक ही थी, परम्परायें वही थीं, वे ही धर्म, वे ही चरितनायक, वही प्राचीन पौराणिक गाथा, वही ज्ञान-विज्ञान भाषा—संस्कृति, पूजोपासना के वे ही स्थान जो समूचे देश में फैले हुए हैं, वे ही ग्राम पंचायतें और वे ही आदर्श तथा राजतन्त्र।" प्रत्येक भारतीय के लिए सम्पूर्ण भारत पुण्य-भूमि थी।

"But right from beginning culturally she has been one, because she had the same background, the same traditions, the same religions, the same heroes and heroines, the same old mythology, the same learned language (Sanskrit), the same village panchayats and the same ideology and police."

—Jawahar Lal Nehru.

भारत की मौलिक एकता के विषय में यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि यह जबर्दस्ती नहीं लादी गई थी बल्कि विभिन्न तत्वों के बीच एकता का भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया था। मौलिक एकता की अभिव्यक्ति निम्नलिखित रूपों में हुई है—

भौगोलिक एकता

भौगोलिक दृष्टि से भारतवर्ष को एक इकाई कहा जा सकता है। भारतवर्ष की निश्चित सीमायें जैसे—हिमालय, समुद्र आदि भारत को अन्य देशों से पृथक

कारण इसको बहुधा एक देश नहीं वरन् एक उपमहाद्वीप कहा जाता है। भोजन-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन तथा आचार-विचार इत्यादि में जितनी विभिन्नता भारतवर्ष में है उतनी संसार के किसी अन्य देश में नहीं है। पूर्व में रहने वाले आसामी और पश्चिम के गुजराती के भोजन-पान और आचार-विचार में ही अन्तर नहीं है बल्कि उनकी भाषा में भी काफी अन्तर है। इसी प्रकार श्रीनगर और मद्रास के निवासियों के जीवन में भी बहुत अन्तर है। इसके अलावा भारतवर्ष में विभिन्न जातियों, धर्मानुयाइयों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। प्राचीन काल में भी इस विभिन्नता का अच्छी तरह से ज्ञान हुआ था जिसका उल्लेख कर्मपुराण में मिलता है। कर्मपुराण में कहा गया है कि "भारतवर्ष में विभिन्न जाति के व्यक्ति रहते हैं तथा भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं और विभिन्न देवताओं की पूजा करते हैं।

"भारते स्त्रियः पुन्सो नानावर्णाः प्रकीर्तिताः।
नानादेवार्चने युक्ता नानाकर्माणि कुर्वते ॥"

मौलिक एकता

किन्तु इन विभिन्नताओं के बावजूद भी भारतवर्ष में जबरदस्त एकता रही है। प्रसिद्ध इतिहासकार स्मिथ ने कहा है, "इसमें सन्देह नहीं कि भारत में मौलिक एकता रही है। यह एकता रक्त, रंग, भाषा, वेश-भूषा और पूजोपासना के भेदों का अतिक्रमण कर जाती है।"

"India, beyond all doubts, possesses a deep underlying fundamental unity for more profound than that produced either by geographical isolation or by political suzerainty." —V. A. Smith

भारत की मौलिक एकता के विषय में श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा है, "भारतवर्ष सदैव से एक रहा है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि एक ही थी, परम्परायें वही थीं, वे ही धर्म, वे ही चरितनायक, वही प्राचीन पौराणिक गाथा, वही ज्ञान-विज्ञान भाषा—संस्कृति, पूजोपासना के वे ही स्थान जो समूचे देश में फैले हुए हैं, वे ही ग्राम पंचायतें और वे ही आदर्श तथा राजतन्त्र।" प्रत्येक भारतीय के लिए सम्पूर्ण भारत पुण्य-भूमि थी।

"But right from beginning culturally she has been one, because she had the same background, the same traditions, the same religions, the same heroes and heroines, the same old mythology, the same learned language (Sanskrit), the same village panchayats and the same ideology and police."

—Jawahar Lal Nehru.

भारत की मौलिक एकता के विषय में यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि यह जबर्दस्ती नहीं लादी गई थी बल्कि विभिन्न तत्वों के बीच एकता का भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया था। मौलिक एकता की अभिव्यक्ति निम्नलिखित रूपों में हुई है—

भौगोलिक एकता

भौगोलिक दृष्टि से भारतवर्ष को एक इकाई कहा जा सकता है। भारतवर्ष की निश्चित सीमायें जैसे—हिमालय, समुद्र आदि भारत को अन्य देशों से पृथक

प्रश्न २—भारत की मौलिक एकता से क्या अभिप्राय है? इस एकता की अभिव्यक्ति किन रूपों में हुई?

अथवा

भारतवर्ष में अनेक विभिन्नताओं के बावजूद एक जबरदस्त एकता विद्यमान है। इस कथन की पुष्टि कीजिये।

मानव जाति का आदि देश कहाँ था? यह बतलाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। यह भी बतलाना सरल कार्य नहीं है कि विश्व की विभिन्न जातियों का आदि निवास किसी एक स्थान अथवा विश्व के भिन्न-भिन्न भागों में था। परन्तु इतना निश्चित है कि इन जातियों ने अपना आदि स्थान त्याग कर पर्यटन आरम्भ किया और कालान्तर में परस्पर मिल गईं। इस सम्मिश्रण के कारण मौलिकता में परिवर्तन आ गया और मिश्रित सभ्यता तथा संस्कृति का सृजन हुआ।

भारत के ऊपर प्रकृति की विशेष कृपा रही है। यह देश सदैव धन-धान्य से पूर्ण रहा। यही कारण है कि विदेशी लोग सदैव इसकी ओर आकर्षित हुए और इस पर विजय प्राप्त कर इसकी अपार सम्पत्ति का उपभोग करने का प्रयत्न किया। भिन्न-भिन्न जातियों ने भिन्न-भिन्न कालों में भारत में प्रवेश किया। कुछ जातियाँ भारतीयों में मिल गईं और अपना अस्तित्व खो बैठीं। परन्तु कुछ जातियों ने अपना अलग अस्तित्व बना रखा है। इन पर भारतीय सभ्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

भारतवर्ष का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब यहाँ एकता थी तब देशवासियों ने बहुत अधिक उन्नति की थी और एकता का अभाव होने पर सदैव पतन ही हुआ है। कुछ विदेशी विद्वानों का यह कहना है कि भारतवर्ष में वास्तविक एकता की स्थापना अंग्रेजों के आने के बाद हुई है। किन्तु इस धारणा के विपरीत अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने लिखा है कि भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन काल से ही एक जबर्दस्त मौलिक एकता विद्यमान रही है।

भारत की विभिन्नतायें

भारतवर्ष एक विशाल देश है। इसके विस्तार और इसकी विशालता के,